रात्री क्लास ओम शान्ति 6-9-67

बच्चों को निश्चय भी बनना है। भयभीत नही होना चाहिये। बाप की भी महिमा करते है नां। तो उनके तुम बच्चे भी निर्भय होने चाहिये। बहुत आफतें आनी है। जितना2 बाप की याद उतनी शक्ति मिलती जावेगी। निर्भय होते जावेंगे। अपने दिल को पक्का करते जाओ। तूफान आद की परवाह नही हो। बाम्बे वालों को सुनाया है कि तूफान है बरसात है। तो बोले कि कुछ भी हो हम तो बाबा पास आते है नां। बाबा के पास आकर प्राण छूट गये तो अच्छा ही है। ज्ञान सागर का यह सच्चा घाट है। ज्ञानामृत बहुत मिल रहा है। तो यहाँ पर ही प्राण तन से निकले तो और ही अच्छा है। बच्चे समझते है कि हम सदेव निरोगी धनवान भी बनेंगे। पवित्र भी रहेंगे। पुरुषार्थ में कमी नही होनी चाहिये नही तो पदकम हो जावेगा। साधु सन्यासी आद तो कब भी चोट खाने लिये नही कहते है। बाप कहते है कि याद सिर्फ बाप को करना है। जितना2 याद करेंगे कट उतरती जावेगी। नही तो बहुत कष्ट होगा। पिछाडी को बहुत साक्षात्कार होंगे। इन बच्चों को पाकिस्तान में तो बहुत साक्षात्कार होते थे। यह तो उस खुशी में ही थे। मनुष्यों को तो बहुत डर था। तो तुम बच्चों को भी निर्भय होना है। बाप कहते है कि मै जो हूँ जैसा हूँ सो तुमने ही जाना है। तुमको परिचय दिया है। तुम बच्चों को ज्ञान मिल रहा है। तुम्हारे लिये है कहानी। वो तो अज्ञान नींद में सोये हुये है। ज्ञान देने वाला तो ज्ञान सागर एक ही है। बाकी शास्त्रों का ज्ञान कोई ज्ञान नही है। वो सब है भक्ति। तुम जानते हो कि आधा कल्प है भक्ति। आधा कल्प ज्ञान। यह तो है हद के रात और दिन। बेहद का बाप तुम बच्चों को पढाते है। बेहद का ही सन्यास कराते है। अपने को आत्मा समझ कर और बाप को याद करो। जो कुछ भी देखते है वो सब खलास हो जाना है। हमको बाबा के पास जाना है। जब तक कि राजधानी स्थापन हो तब तक तो हम पुरानी दुनियाँ में ही है। फिर हम आवेंगे राज्य करने। माया पर जीते जीत है माया पर हारे हार। हारे है अब जीत पाते है। बाप कहते है कि जीता भी तुमने ही था। हारा भी तुम्ही ने है। और कोई धर्म वाला स्वर्ग का राज्य नही पाते है। देवी देवता धर्म वाले तो जो और धर्मों में चले गये है वो तो निकल आवेंगे। हिन्दु धर्म तो है नही। क्रिश्चियन का क्रिश्चियन धर्म ही है। बदला नही है। यह देवी देवता धर्म वाले ही हिन्दु बन गये है। पतित हो गये है इसलिये ही अपने को देवता कहला नही सकते है। जब यह धर्म नही हो तभी तो स्थापन हो नां। क्रिश्चियन धर्म है ही है तो फिर से स्थापन क्या होगा? देवी देवता तो धर्म ही नही है इसलिये ही फिर से स्थापन होता है। (वृक्ष के झाड का मिसाल) हम जब है तो कोई दूसरा धर्म होता नही था। अभी और तो सभी धर्म है तो देवी देवता धर्म है नही। फाउंडेशन है नही। अभी तुम बच्चे फाउंडेशन डाल रहे हो। फाउंडेशन डालने लिये भी सेरीमणी करते है। अब बाप ने फाउंडेशन तो लगाया है नां। बाकी स्वर्ग का उदघाटन को तो तुम करेंगे नां। शिव बाबा तो उदघाटन करने लिये नही आवेंगे। जो बैठे है वो ही करेंगे। शिव बाबा उदघाटन करने नही आते है। बाकी जो अच्छी मेहनत करेंगे वो ही नये मकान में सुख पावेंगे। बाकी और सभी भक्ति की बातों को भी कान से निकाल दो। सिर्फ एक ही बात करनी है याद कि हम आत्मा है बाप के पास जाना है। बाप को याद किया तो स्वर्ग में जरूर आवेंगे। ब्राह्मण का तो स्वर्ग में जरूर आवेगा। भल ब्राह्मण बन कर फिर विकार में जाते है तो भी आवेंगे। कल्प2 ही ऐसा होता जावेगा। इसलिये है बहुत खबरदारी चाहिये होती है। अपने को ही घाटा नही डालना चाहिये। श्रीमत पर नही चलने कारण ही घाटा पड़ता है। याद में ही मेहनत है। मुझे बाबा कितना पास में है। जैसे कि मै उनकी गोद में हूँ, वो मेरी गोद में है। फिर भी जैसे कि तुम याद करते हो वैसे ही मुझको भी करना पड़ता है। एकदम साथ2 में बैठा हूँ तो भी भूल जाता हूँ। ऐसे नही कि हम तो बाजू में है। नही वो तो कोई यात्रा नही है। याद करना ही पड़ता है। इतनी पास में हूँ तो भी मेहनत बहुत करनी होती है। अच्छा गुडनाईट